



## IUCN 2017 की रेडलिस्ट

प्रिय विद्यार्थियों,

यू.पी.एस.सी. परीक्षा के पैटर्न को ध्यान में रखते हुए हमने IUCN 2017 की रेड लिस्ट को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। विभिन्न वर्गों में विभाजित यह सूची प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा दोनों की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है।

### स्तनधारी (Mammals)

#### **इरावदी डॉल्फिन (Irrawaddy Dolphin) : वैज्ञानिक नाम *Orcaella Brevirostris***

- IUCN 2017 की सूची में इस प्रजाति को सुभेद्य या अतिसंवेदनशील (Vulnerable-VU) से **लुप्तप्राय (Endangered-EN)** की श्रेणी में रखा गया है।
- मछली पकड़ने की दर में निरंतर हो रही वृद्धि के कारण इनकी आबादी खतरे में पड़ गई है।
- घटते वास स्थान, विशेष रूप से नदी बांधों से और मछली पकड़ने के उपकरणों से डॉल्फिन की संख्या में महत्वपूर्ण रूप से कमी दर्ज की गई है।

#### **नैरो-रिज्ड फिनलेस पोर्पोईस (narrow-ridged finless porpoise) : वैज्ञानिक नाम *Neophocaena Asiaeorientalis***

- मुख्य रूप से तटीय जल, मुहानों तथा बड़ी नदियों में पाई जाने वाली मछली की इस प्रजाति को अतिसंवेदनशील (VU) से **लुप्तप्राय (EN)** की श्रेणी शामिल किया गया है।
- यह प्रजाति गिलनेट (मछली पकड़ने का जाल) में उलझने की प्रवृत्ति के कारण बेहद संवेदनशील है।
- मछली पकड़ने के तरीकों में परिवर्तन और ध्वनिक निवारकों (Acoustic Deterrents) के उपयोग से कुछ क्षेत्रों में आकस्मिक रूप में इसकी संख्या में कमी आई है।
- पूर्वी एशिया में झींगा खेती और बंदरगाह (एवं अन्य) के विकास के लिये तटीय क्षेत्रों के व्यापक रूपांतरण से उत्पन्न होने वाले खतरे इस प्रजाति की संख्या में निरंतर गिरावट का कारण बन रहे हैं।

#### **विशालकाय ईलैंड : वैज्ञानिक नाम *Tragelaphus Derbianus***

- यह सबसे बड़ी चिकारा/मृग (Antelope) प्रजाति है, जिसके अत्यधिक विशिष्ट सर्पिलाकार "V" आकार के सींग होते हैं। इस पशुधन एवं मध्य अफ्रीकी एंटीलोप को वर्ष 2017 की कम चिंतनीय (Least Concern-LC) से **अतिसंवेदनशील (VU)** की श्रेणी में शामिल किया गया है।
- 1999 में अनुमानित रूप से 15,000-20,000 विशालकाय ईलैंड अस्तित्व में थे।
- अवैध शिकार (bushmeat-एक प्रकार का मांस) और संरक्षित क्षेत्रों में किसानों तथा पशुधन मालिकों द्वारा अतिक्रमण किये जाने से इनकी संख्या में कमी आई है।



**नैसी मा' नाईट मंकी (Nancy Ma's Night Monkey) : वैज्ञानिक नाम Aotus nancymae**

- कृषि हेतु जंगलों के रूपांतरण से हुए आवासीय नुकसान और जैव चिकित्सा अनुसंधान तथा व्यापार के लिये जंगली जानवरों को पकड़ने के कारण पिछले 25 वर्षों में इसकी जनसंख्या में कम-से-कम 30% की गिरावट आई है।
- इसके परिणामस्वरूप IUCN की रेड लिस्ट में इस प्रजाति को कम चिंतनीय (Least Concern) से अतिसंवेदनशील (VU) की श्रेणी में शामिल किया गया है।
- मलेरिया अनुसंधान के लिये नाईट मंकी का अवैध व्यापार इस प्रजाति के लिये विशेष चिंता का विषय है।

**रॉड्रिग्स फ्लाईंग फॉक्स (Rodrigues Flying Fox) : वैज्ञानिक नाम Pteropus Rodricensis**

- इस प्रजाति के संरक्षण हेतु संचालित कार्यों (जिसमें एक सफल कैप्टिव प्रजनन कार्यक्रम भी शामिल है), प्राकृतिक आवासों की बहाली, वाटरशेड संरक्षण, जागरूकता बढ़ाने हेतु शिक्षा कार्यक्रम चलाए जाने के परिणामस्वरूप इस प्रजाति की स्थिति में थोड़ा सुधार देखा गया है।
- IUCN 2017 की सूची में इस प्रजाति को गंभीर रूप से संकटापन्न (Critically Endangered) की श्रेणी से **संकटापन्न (EN)** की श्रेणी शामिल किया गया है।
- वर्ष 2003 में इस प्रजाति की संख्या केवल 4,000 थी जो 2016 में बढ़कर 20,000 तक पहुँच गई है।
- भविष्य में इस प्रजाति का अस्तित्व निरंतर चलाए जा रहे संरक्षण प्रयासों और जलवायु परिवर्तन परिदृश्यों पर निर्भर करेगा क्योंकि गंभीर उष्णकटिबंधीय चक्रवात इस प्रजाति की 50% से अधिक आबादी को नष्ट कर सकते हैं।

**क्रिसमस आइलैंड पिपिस्ट्रेल (Christmas Island Pipistrelle) : वैज्ञानिक नाम Pipistrellus Murrayi**

- इस प्रजाति को विलुप्त (EX) घोषित किया गया है, अगस्त 2009 के बाद से इसे पुनः नहीं देखा गया है।
- क्रिसमस आइलैंड (ऑस्ट्रेलिया) पूर्वी हिंद महासागर में स्थित है और इस द्वीप पर पिपिस्ट्रेल चमगादड़ की यह एकमात्र प्रजाति पाई गई थी।
- फिलहाल इस चमगादड़ की संख्या में आई गिरावट और इसकी विलुप्ति के कारण अस्पष्ट हैं। अतीत में आवास नुकसान के कारण इनकी संख्या में कुछ गिरावट आई थी, लेकिन मात्र इसी कारण को इस प्रजाति के पूर्ण रूप से गायब होने के लिये जिम्मेदार नहीं माना जा सकता है।

**हेउग्लिन गज़ेल (Heuglin's Gazelle) : वैज्ञानिक नाम Eudorcas tilonura**

- ये दक्षिणी सूडान, उत्तरी इथियोपिया और पश्चिमी एरिट्रिया के बीच नाइल नदी के पूर्व में फैले हैं।
- 2017 में यह प्रजाति अतिसंवेदनशील से संकटापन्न (Endangered-EN) की श्रेणी में आ गई है क्योंकि यह प्रजाति पिछले अनुमान (2008 में) के मुताबिक लगभग 20% कम हो गई है।
- वर्ष 1999 में इनकी अनुमानित संख्या 3,500-4,000 थी, लेकिन 2016 तक इनकी अनुमानित संख्या घटकर 2,500-3,500 हो गई।
- अवैध शिकार, घरेलू पशुओं के साथ प्रतिस्पर्धा, आवास अवक्रमण और इसकी अधिकांश सीमाओं में अप्रभावी संरक्षण के परिणामस्वरूप इस प्रजाति की संख्या में निरंतर गिरावट आई है।

	Current Affairs	641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
		दूरभाष : 011-47532596, (+91)8130392354, 56 ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation ट्विटर: twitter.com/drishtiiias



## सरीसृप (Reptiles)

### **बैंडेड ग्राउंड गेको (*Banded Ground Gecko*) : वैज्ञानिक नाम *Goniurosaurus splendens***

- 2017 में इस प्रजाति को IUCN की रेड लिस्ट में संकटापन्न (EN) के रूप में शामिल किया गया।
- टोकूनोशिमा (Tokunoshima) के एक जापानी द्वीप (Ryukyu Archipelago) पर पाए जाने वाले इस सरीसृप की आबादी में कृषि भूमि विकास, सड़क निर्माण और वनों की कटाई (विशेष रूप से निचले इलाकों में) के कारण भारी कमी आई है।
- एक संभावना के अनुसार, इस छिपकली (Gecko) को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (International Pet Trade) के लिये भी पकड़ा जाता है, जिससे इस प्रजाति की संख्या पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है।

### **क्रिसमस आइलैंड ब्लू-टेल्ड शिनिंग-स्किंक (*Christmas Island Blue-tailed Shinning-Skink*) : वैज्ञानिक नाम *Cryptoblepharus Egeriae***

- 1970 के दशक के उत्तरार्ध से वुल्फ स्नेक (Wolf Snake का वैज्ञानिक नाम *Lycodon Capucinus* है) के परभक्षण (Predation) के कारण इनकी संख्या में नाटकीय रूप से गिरावट आई है।
- IUCN की सूची में इसे वन से विलुप्त (Extinct in the Wild - EW) की श्रेणी में शामिल किया गया है।
- इस प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये एक कैप्टिव प्रजनन कार्यक्रम क्रिसमस आइलैंड नेशनल पार्क में स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य अंततः प्रजातियों की संख्या को बढ़ाना है।

### **मियाको ग्रास लिज़र्ड (*Miyako Grass Lizard*) : वैज्ञानिक नाम *Takydromus Toyamai***

- 2009 में इसे संकटापन्न (EN) के रूप में निर्धारित किया गया था जिसे 2017 में पुनः मूल्यांकन द्वारा संकटापन्न (EN) की श्रेणी में रखा गया।
- यह प्रजाति दक्षिणी Ryukyusm, जापान के मियाको आइलैंड समूह के लिये स्थानिक है।
- यहाँ भूमि विकास के कारण उत्पन्न हुई इन प्रजातियों के परभक्षण और आवास हानि के चलते यह प्रजाति संकटग्रस्त हो गई है।
- यह प्रजातियाँ संरक्षित हैं और मियाकोजिमा शहर में स्थानीय विनियमन के तहत कृषि को निषिद्ध कर दिया गया है, लेकिन भविष्य में इन प्रजातियों की संख्या में और गिरावट को रोकने के लिये निरंतर निगरानी और संरक्षण कार्यों की आवश्यकता है।

### **क्रिसमस आइलैंड व्हिपटेल-स्किंक (*Christmas Island Whiptail-Skink*) : वैज्ञानिक नाम *Emoia Nativitatis***

- क्रिसमस आइलैंड के लिये स्थानिक, इस प्रजाति को 2010 के बाद से व्यापक सर्वेक्षण के बाद IUCN की लाल सूची में विलुप्त (EX) घोषित किया गया था, 2010 के बाद से इस प्रजाति के किसी भी सदस्य को खोजने में सफलता नहीं मिल सकी।
- इस प्रजाति के लिये एक कैप्टिव ब्रीडिंग प्रोजेक्ट का प्रयास किया गया, लेकिन दुर्भाग्य से यह असफल रहा। इस प्रजाति के अंतिम ज्ञात सदस्य की 2014 में मृत्यु हो गई।
- इस प्रजाति की आबादी में तेजी से गिरावट और विलुप्त होने की संभावना क्रिसमस द्वीप पर लाई गई प्रजातियों की एक श्रृंखला के प्रभाव के कारण पैदा हुई थी, जिसमें येलो क्रेजी एंट (*Yellow Crazy Ant*) वैज्ञानिक नाम *Anoplolepis Gracilipes* और इंडियन वुल्फ स्नेक (*Indian Wolf Snake*) वैज्ञानिक नाम *Lycodon Capucinus* शामिल हैं, जिससे आइलैंड पर खनन गतिविधियों के कारण इस प्रजाति के प्राकृतिक वन आवास में कमी आई और यह विलुप्त हो गई।



### **क्रिसमस आइलैंड चेंड गेको (Christmas Island Chained Gecko) : वैज्ञानिक नाम *Lepidodactylus listeri***

- यह 1970 के अंत तक काफी संख्या में पाया जाता था लेकिन बाद में इसकी संख्या में तेजी से कमी आई और 2017 में इसे IUCN की सूची में अतिसंवेदनशील (VU) श्रेणी से वन से विलुप्त (Extinct in the Wild - EW) की श्रेणी में शामिल किया गया है।
- इस प्रजाति की संख्या में गिरावट का कारण परभक्षण (Predation) था जो वुल्फ स्नेक (*Lycodon Capucinus*) के 1980 के दशक की शुरुआत में क्रिसमस आइलैंड पर पहुँचने के कारण शुरू हुआ।
- येलो क्रेजी एंट्स (*Anoplolepis Gracilipes*), फारल कैट्स, चूहे और एक हमलावर (Invasive) कनखजूरा (*Centipede*) वैज्ञानिक नाम *Scolopendra Subspinipes* सहित अन्य बाह्य परभक्षियों ने भी इस प्रजाति के पतन में योगदान दिया है।
- गेको को विलुप्त होने से बचाने के लिये इसकी अधिकांश संख्या को 2009 में संरक्षण में लिया गया था और अंततः जंगलों में वापस लाने के इरादे से एक कैप्टिव ब्रीडिंग प्रोग्राम शुरू किया गया था।

### **धारीदार पैररहित छिपकली (Striped Legless Lizard) : वैज्ञानिक नाम *Delma impar***

- ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण-पूर्व कोने में, अवशेष आवासों के छोटे पैच में पाई जाने वाली यह प्रजाति पृथक उप-जनसंख्या में, क्षेत्र में निरंतर गिरावट, समशीतोष्ण घास के मैदान के प्राकृतिक वास की गुणवत्ता में आई कमी के कारण 2017 में अतिसंवेदनशील (VU) से संकटापन्न (EN) की श्रेणी में आ गई है।
- इस प्रजाति के लिये मुख्य खतरा भूमि की शुद्धि (land clearance) और कृषि गहनता है।
- चूँकि इसके अधिकांश आवास दक्षिणी विक्टोरिया के उपजाऊ मैदानों पर होते हैं, इसलिये यह खतरा आगे भी जारी रहने की संभावना है।
- यह भी संभावना है कि इस गिरावट को रोकने के लिये कोई महत्वपूर्ण संरक्षण हस्तक्षेप नहीं होने पर इस छिपकली की स्थिति और खराब हो जाएगी।

### **साउथर्न इवन-फिंगर्ड गेको (Southern Even-Fingered Gecko) : वैज्ञानिक नाम *Alsophylax Laevis***

- संख्या में भारी कमी के कारण इस प्रजाति को IUCN की रेड लिस्ट में 2017 में गंभीर रूप से संकटापन्न (CR) की श्रेणी में रखा गया है।
- यह प्रजाति आमतौर पर अनावृत्त, समतल मैदानी इलाकों में पाई जाती है, यह मुख्यतः उज्बेकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान के रेगिस्तानी क्षेत्र (Takyr) जो लगभग वनस्पति विहीन होते हैं, में पाई जाती है।
- वह स्थान जहाँ पर पहली बार इस प्रजाति की खोज की गयी थी, अब अस्तित्व में नहीं है क्योंकि अब वह स्थान जलप्लावित हो गया है।
- पिछले 20-30 वर्षों में इसके आधे से अधिक प्राकृतिक आवास समाप्त हो गए हैं।

## **उभयचर (Amphibians)**

### **गोल्ड-स्पॉटेड मार्सूपियल फ्रॉग (Gold-spotted Marsupial Frog) : वैज्ञानिक नाम *Gastrotheca aureomaculata***

- 2017 में इस प्रजाति IUCN की रेड लिस्ट में संकटापन्न श्रेणी के रूप में प्रवेश किया, जो अब संकटापन्न (EN) की ओर बढ़ रही है।
- यह प्रजाति केवल दक्षिण-मध्य कोलंबिया के कुछ इलाकों में पाई जाती है।
- लकड़ी के निष्कर्षण और कृषि के फैलाव (अवैध फसलों की खेती सहित) के माध्यम से प्राकृतिक वासों की समाप्ति और जल प्रदूषण ने इस वानस्पतिक मेंढक के लिये सबसे गंभीर खतरे उत्पन्न किये हैं।



## अकशेरुकी (Invertebrates)

### **मिडिरा अर्चिपेलागो (Madeira Archipelago) : वैज्ञानिक नाम *Amphorella Melampoides***

- यह अकशेरुकी घोघा पहले अतिसंवेदनशील (VU) के रूप में सूचीबद्ध था किंतु आक्रामक प्रजातियों के बेहतर प्रबंधन के परिणामस्वरूप 2017 में इसे कम चिंतनीय (Least Concern-LC) श्रेणी में रखा गया है।
- EU लाइफ प्रोग्राम प्रोजेक्ट के माध्यम से इस प्रजाति के संरक्षण की दिशा में सकारात्मक कदम इन स्थानीय मिडिरा अर्चिपेलागो (Madeira Archipelago) प्रजातियों के लिये जारी रखने की आवश्यकता है, क्योंकि यह आक्रामक शिकारियों (जैसे चूहों) के लिये अतिसंवेदनशील है।
- सूखे की बढ़ी हुई आवृत्ति भी इस घोघा के लिये भविष्य में खतरा हो सकती है, लेकिन इन प्रजातियों के लिये खतरे की मुख्य वजह वर्तमान में अज्ञात है।

### **बोएत्जेरिया क्रिस्पा *Boettgeria Crispa***

- यह मडिरा द्वीप (Madeira Island) पर पाई जाने वाली एक स्थलीय घोघा की स्थानीय (Endemic) प्रजाति है।
- इस प्रजाति के संबंध में कराए गए सर्वेक्षणों ने 2006 से इनकी संख्या में सामान्य गिरावट की सूचना दी है, जिसके कारण यह प्रजाति 2017 में संकट के करीब (Near Threatened-NT) से **लुप्तप्राय (EN)** की श्रेणी में चली गई।
- ऐसा माना जाता है कि तूफान या आग के कारण बड़े पेड़ों की क्षति हुई है और बरसात की आवृत्ति में वृद्धि होने से सूक्ष्म जलवायु परिवर्तन इस प्रजाति के लिये खतरे का प्रमुख कारण रहा है।
- बड़े पेड़ों के पुनरुत्थान को सुनिश्चित करने के लिये आवास प्रबंधन की आवश्यकता है, साथ ही साथ बड़े पेड़ों और अन्य छायांकित चट्टानी निवासों को बनाए रखने के लिये वुडलैंड के प्रबंधन को भी सुनिश्चित किया जा सकता है जो इस घोघा (Snail) के लिये उपयुक्त हो सकते हैं।

### **रेड-लेग्ड फायर मिल्लिपीड (*The Red-legged Fire Millipede*) (कनखजूरा) : वैज्ञानिक नाम *Aphistogoniulus Corallipes***

- यह केवल दक्षिणी मेडागास्कर में निचले स्तर के वर्षा वन के छोटे टुकड़े, मैनेंटेंटली (Manantantely) के प्राइवेट रिजर्व में पाया जाता है।
- इस प्रजाति ने 2017 में IUCN की रेड लिस्ट में प्रवेश किया, जिसका **गंभीर रूप से संकटापन्न (CR)** के रूप में मूल्यांकन किया गया।
- इसके वन आवास का अतीत में भारी दोहन किया गया है और स्थानीय समुदायों द्वारा स्लैश और कृषि के अवशेषों तथा लकड़ी के संग्रह को जलाने के कारण इसकी संख्या में गिरावट जारी है।
- इस कनखजूरे का अस्तित्व पूरी तरह से इस जंगल का अस्तित्व बने रहने पर निर्भर करता है।

### **इंटरमीडिएट रॉयल पिग्मी ग्रासहपर (*Intermediate Royal Pigmy Grasshopper*) : वैज्ञानिक नाम *Andriana Intermedia***

- इसे 2017 में IUCN की लाल सूची में अतिसंवेदनशील (VU) प्रजाति के रूप में शामिल किया गया।
- यह लंबे पंख वाली प्रजाति नमी वाली निचली भूमि और नमी वाले पर्वतीय उष्णकटिबंधीय जंगलों में पाई जाती है तथा इसकी संख्या वन निवास स्थान के नुकसान के कारण घट रही है, क्योंकि लॉगिंग (Logging) और लकड़ी की कटाई इसकी सीमा के भीतर जारी है।

### **शेरोन गोटाग्रास (*Sharon Goatgrass*) : वैज्ञानिक नाम *Aegilops Sharonensis***

- यह ब्रेड गेहूं, डरम (durum) गेहूं और कई अन्य कृषि से संबंधित गेहूं प्रजातियों की तरह का एक माध्यमिक जंगली प्रजाति है।
- यह आधुनिक कृषि के लिये पहले से ही मूल्यवान साबित हुई है, जिसका उपयोग कृषि फसलों में पाई जाने वाली एक बीमारी, येलो रस्ट (Yellow Rust) के प्रति प्रतिरोध (Resistance) प्रदान करने के लिये किया गया है तथा इसमें लवण सहनशीलता गुण भी मौजूद है।
- इसलिये इसके इन गुणों को ध्यान में रखते हुए IUCN की रेड लिस्ट 2017 में इस प्रजाति का मूल्यांकन **अतिसंवेदनशील (VU)** के रूप में किया गया है।

	Current Affairs	641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
		दूरभाष : 011-47532596, (+91)8130392354, 56 ई-मेल: <a href="mailto:helpline@groupdrishti.com">helpline@groupdrishti.com</a> , वेबसाइट: <a href="http://www.drishtiIAS.com">www.drishtiIAS.com</a> फेसबुक: <a href="https://www.facebook.com/drishtithevisionfoundation">facebook.com/drishtithevisionfoundation</a> ट्विटर: <a href="https://twitter.com/drishtiiias">twitter.com/drishtiiias</a>



- यह मूल्यांकन भविष्य में इस प्रजाति की संख्या में महत्वपूर्ण गिरावट और अगले तीन पीढ़ियों में प्रस्तावित कम-से-कम 30% गिरावट के आधार पर किया गया है।
- शहरीकरण और कृषि विकास के कारण उचित आवास के व्यापक नुकसान को इसका जिम्मेदार माना गया है।

### रेड राइस (Red Rice) : वैज्ञानिक नाम *Oryza Rufipogon*

- यह प्राथमिक आनुवंशिक रिलेटिव है और खेती वाले चावल तथा अफ्रीकी चावल का एक संभावित प्रजनक (Progenitor) है।
- इस प्रजाति ने कई अवसरों पर खेती के चावल के लिये आनुवंशिक दाता (Donor) का काम किया है, जहां इसके जीन ने अजैविक दबाव और रोगों से लड़ने के लिये प्रतिरोधक क्षमता तथा उर्वरता को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका निभाई है।
- यह एक व्यापक प्रजाति है और आसानी से खेती वाले चावल (*Oryza Sativa*) से अधिक उत्पादन करती है।
- वर्तमान में इसकी संख्या वैश्विक स्तर पर स्थिर है और इस पर कोई गंभीर खतरा नहीं है। 2017 में इसे IUCN की रेड लिस्ट में **कम चिंतनीय (Least LC)** के रूप में शामिल किया गया था।

### मेकांप्सिस सुपरबा *Meconopsis Superba*

- पश्चिमी भूटान के लिये स्थानिक और केवल 20 किमी<sup>2</sup> तक के क्षेत्र में सीमित इस पौधे को 2017 में लुप्तप्राय (EN) की श्रेणी में IUCN की रेड लिस्ट में शामिल किया गया।
- यह पौधा आमतौर पर सजावटी उद्देश्यों के लिये उगाया जाता है और इसकी संख्या में निरंतर गिरावट आ रही है। पशुधन चराई के लिये उपयुक्त क्षेत्रों को बनाने के लिये आग के आवधिक उपयोग के कारण इसके अस्तित्व पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है।

### पित्तोस्पोरुम ब्रेविस्परियम *Pittosporum Brevispinium*

- यह एक छोटा पेड़ है, जो न्यू कैलेडोनिया में कम ऊँचाई वाले स्थानों पर उगता है।
- इस प्रजाति की संख्या में लगातार गिरावट जारी है क्योंकि इसके सूखे वन निवास को चरागाह में परिवर्तित किया जा रहा है और शेष वन निवास रूसा हिरण (*Rusa Timorensis*) द्वारा विकृत किया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप इस प्रजाति को 2017 में लुप्तप्राय (EN) से **गंभीर रूप से लुप्तप्राय (CR)** श्रेणी में रखा गया है।

### रोडोडेंड्रन केसंगिए *Rhododendron Kesangiae*

- यह भूटान की स्थानिक एक बड़ी झाड़ी (Shrub) की प्रजाति है और अक्सर फर (Fir) और हेमलॉक (Hemlock) जंगलों में अन्य रोडोडेंड्रन (*Rhododendrons*) और बाँस के बीच उगते हुए दिखाई देती है।
- यह पौधा अक्सर एक सजावटी प्रजाति के रूप में उगाया जाता है, और इसके लकड़ी का उपयोग ईंधन के लिये किया जाता है और पत्तियों को व्यापक रूप से स्थानीय रूप से मक्खन के लिये एक रैपर के रूप में उपयोग किया जाता है।
- इसे व्यापक मात्रा में पाए जाने, किसी भी महत्वपूर्ण खतरे की कमी और विभिन्न क्षेत्रों में पाए जाने का अर्थ है कि इस प्रजाति को पहली बार IUCN की रेड लिस्ट में कम चिंतनीय (Least Concern-LC) की श्रेणी में शामिल किया गया।

### बिस्टोर्ता ग्रिएसॉनी *Bistorta Griersonii*

- भूटान के स्थानिक और उच्च ऊँचाई वाले स्थानों में पाई जाने वाली इस प्रजाति को केवल दो रिकॉर्ड (1949 और 1993 की डेटिंग) से जाना जाता है।
- इसने IUCN की रेड लिस्ट में 2017 में **लुप्तप्राय (EN)** के रूप में प्रवेश किया।





- शाक (Herb) की यह प्रजाति चट्टानों, चट्टानों के किनारों और खड़े रेतिले किनारों पर चट्टानों के बीच उगती है, और इन आवासों को ओफियोकोडेसेप्स (Ophiocodyceps प्रजातियों (पारंपरिक चीनी और तिब्बती दवाओं में व्यापक रूप से उपयोग किये जाने वाले कवक की एक प्रजाति) की खोज ट्रैम्पलिंग (Trampling) और खुदाई (Digging) की किया जा रही है।

#### **वाइल्ड इम्मेर (Wild Emmer) : वैज्ञानिक नाम *Triticum Turgidum***

- यह सभी खेती योग्य गेहूं की प्रजातियों से संबंधित जंगली प्रजाति है।
- यह मुख्य रूप से ओरा जंगलों, बौने झाड़ी विन्यासों, चरागाहों, परित्यक्त भूमियों और खेती योग्य भूमि के किनारों पर टेरा रोसा या बेसाल्ट मिट्टी पर उगती है।
- इस प्रजाति में सामान्य गेहूं को सूखा सहनशीलता (Tolerance) प्रदान करने में उपयोग की पुष्टि की गई है और यह टी. टर्गिडम (T. turgidum) की सभी प्रजातियों के लिये सक्षम जीन प्रदाता (Donor) है।
- वैश्विक आबादी के लिये कोई ज्ञात खतरा नहीं होने के कारण, इस पौधे का मूल्यांकन 2017 में कम चिंतनीय (LC) के रूप में किया गया था।

#### **व्हाइट ऐश (White Ash) : वैज्ञानिक नाम *Fraxinus Americana***

- यह मूलतः मध्य और पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका में व्यापक स्तर पर पाई जाने वाली वृक्ष की प्रजाति है। फिर भी, इस प्रजाति ने 2017 में IUCN द्वारा जारी रेड लिस्ट में गंभीर रूप से लुप्तप्राय (CR) के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज की।
- इसकी लकड़ी सख्त एवं मजबूत होती है जो विभिन्न प्रकार के सामानों जैसे- बेसबॉल बैट, औजारों के हैंडल से लेकर गिटार और फर्नीचर तक के लिये उपयोगी होती है।
- अमेरिका के अन्य ऐश वृक्षों के साथ-साथ व्हाइट ऐश भी एमराल्ड ऐश बोरर (Emerald Ash Borer), इसका वैज्ञानिक नाम *Agrilus Planipennis* है, नामक भौरों के विनाशकारी प्रभावों से पीड़ित है।
- यह कीट अमेरिका में संभवतः 1990 के दशक में पहली बार देखा गया था और संभवतः यह एशिया से आने वाले प्रभावित शिपिंग पैलेट या क्रेट्स के माध्यम से यहाँ आया था।
- इन विनाशकारी आक्रामक प्रजातियों के प्रसार पर रोक लगाने के लिये कोई ज्ञात समाधान न होने के कारण अगले 100 वर्षों में व्हाइट ऐश की संख्या में कम-से-कम 80% की कमी होने की उम्मीद है।

#### **विल्मॉट्स व्हाइटबीम (Wilmott's Whitebeam) : वैज्ञानिक नाम *Sorbus Wilmottiana***

- यह पश्चिमी इंग्लैंड का एक स्थानीय पौधा है, यहाँ यह समरसेट (Somerset) और ग्लूस्टरशायर (Gloucestershire) में एवन गार्ज (Avon Gorge) के दोनों ओर के क्षेत्र में पाया जाता है।
- यह प्रजाति गंभीर रूप से संकटग्रस्त (Critically Endangered) से लुप्तप्राय (Endangered) की श्रेणी में आ गई है। हालाँकि इनकी संख्या अब भी बहुत कम है। (2016 में इनकी संख्या 97 थी, जिसमें से 60 पूर्ण विकसित वृक्ष थे और वर्तमान में इस क्षेत्र के आसपास की रेलवे लाइन को अपग्रेड करने के काम के कारण तथा एक कवक जनित रोग के प्रसार के कारण यह प्रजाति खतरे में आ गई है। इसलिये इन प्रजातियों के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिये सतत् संरक्षण प्रयासों की आवश्यकता है।

#### **गोल्डेनसील (Goldenseal) : वैज्ञानिक नाम *Hydrastis Canadensis***

- यह संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा का एक जाना-माना औषधीय पौधा है। इस प्रजाति का उपयोग श्वसन पथ संक्रमण, हे फीवर (Hey fever) और विभिन्न प्रकार के पाचन संबंधी विकारों के उपचार के लिये एक अनुपूरक के रूप में किया जाता है।
- विस्तार तथा प्राकृतिक वास की गुणवत्ता में भारी कमी के कारण पिछले 21 से 27 वर्षों में इस पौधे की संख्या में करीबन 30% की कमी आई है।

	Current Affairs	641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
		दूरभाष : 011-47532596, (+91)8130392354, 56 ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation ट्विटर: twitter.com/drishtiiias

- प्राकृतिक वास की रिक्ति तथा घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय औषधीय पौधे के बाजारों के लिये वन्य पौधों के कटाव के संयुक्त खतरे के कारण इनकी संख्या में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप इस प्रजाति को 2017 में IUCN की रेड लिस्ट की अतिसंवेदनशील (Vulnerable-VU) श्रेणी में शामिल गया।

### कैरोलिना ऐश (Carolina Ash) : वैज्ञानिक नाम *Fraxinus Carolinina*

- इस प्रजाति को IUCN की रेड लिस्ट के अंतर्गत संकटग्रस्त (Endangered-EN) के रूप में शामिल किया गया। यह ऐश वृक्ष संपूर्ण दक्षिण-पूर्वी अमेरिका में तथा क्यूबा के द्वीपों पर पाया जाता है।
- यह प्रजाति कुछ निश्चित आर्द्र भूमि वाले प्राकृतिक वासों में पर्याप्त संख्या में पाई जाती है फिर भी एमराल्ड ऐश बोरर (Emerald Ash Borer) नामक भौरे की उत्पत्ति के समय से अन्य उत्तरी-अमेरिकी ऐश प्रजातियों की तरह कैरोलिना ऐश की संख्या में भी तेजी से कमी आ रही है।

### विषुवतरेखीय प्रजाति एलियम एट्रोनिम (Allium latrouinum)

- इस प्रजाति को वर्ष 2017 में IUCN की रेड लिस्ट के अंतर्गत गंभीर रूप से संकटग्रस्त (CR) की श्रेणी में शामिल किया गया।
- वर्तमान में यह पौधा केवल यूनान के एविया द्वीप (Evia Island) के दक्षिणी भाग में स्थित माउन्ट ओची (Mount Ochi) पर पाया जाता है, वर्तमान में इसकी कुल वैश्विक आबादी में लगभग 200-400 पूर्ण विकसित पौधे ही मौजूद हैं।
- हालाँकि, यह ज्ञात प्रजाति एक Natura 2000 साइट के अंतर्गत आती है, इस क्षेत्र में कई विंड पार्क विकसित किये गए हैं और कई विंड टर्बाइन निर्माणाधीन भी हैं, जो संभावित रूप से इस प्रजाति के लिये खतरा है।

## पक्षी (Birds)

### प्रतिष्ठित नार्थर्न ब्राउन कीवी (Northern Brown Kiwi) : वैज्ञानिक नाम *Apteryx Mantelli*

- अतीत में प्राकृतिक वासों में कमी तथा स्तनपायी जंतुओं द्वारा शिकार किये जाने के कारण इस प्रजाति की संख्या में भारी कमी आई। हालाँकि, गहन संरक्षण प्रयासों के कारण इस प्रजाति के संबंध में सकारात्मक परिणाम सामने आए।
- इन संरक्षण कार्यों के कारण 2017 की IUCN की रेड लिस्ट में इसे संकटापन्न (Endangered-EN) श्रेणी से अतिसंवेदनशील (Vulnerable-VU) की श्रेणी में स्थानांतरित किया गया।
- इस प्रजाति को न्यूजीलैंड के तीन कीट मुक्त अपतटीय द्वीपों में पुनर्स्थापित किया गया तथा कई मुख्य भूमि स्थलों पर भी स्थानांतरित किया गया है ताकि इनकी आबादी को बढ़ाया जा सके।
- बिना संरक्षण वाली आबादी में प्रतिवर्ष 2.5 की दर से कमी देखने को मिली है, फिर भी इस कमी को संरक्षित स्थलों पर इनकी आबादी में वृद्धि के कारण संतुलित माना जाता है।

### मेक्को डक (Maccoa Duck) : वैज्ञानिक नाम *Oxyura Maccoa*

- वर्ष 2016 में संकट निकट (Near Threatened- NT) श्रेणी में शामिल किये गए मेक्को डक को वर्ष 2017 में सुभेद्य/अतिसंवेदनशील (Vulnerable-VU) की श्रेणी में स्थानांतरित किया गया।
- इस प्रजाति की पूर्वी अफ्रीकी आबादी में दीर्घकालिक गिरावट दर्ज की गई है।
- दक्षिण अफ्रीका के हालिया प्रमाणों से पता चला है कि अब भी इसकी संख्या में गिरावट आ रही है। हालाँकि, इस गिरावट के सटीक कारण अज्ञात हैं, लेकिन संभावना है कि प्रदूषण और आर्द्र भूमि के रूपांतरण तथा जल निकासी के कारण ऐसा हुआ।



### येल्लो-ब्रेस्टेड बुटिंग येलो ब्रेस्टेड बंटिंग (Yellow-Breasted Bunting) : वैज्ञानिक नाम *Emberiza aureola*

- इसकी जनसंख्या में पूर्व की तुलना में बहुत अधिक गिरावट देखने को मिली है। पिछली तीन पीढ़ियों में लगातार इसकी संख्या में कमी होने के कारण वर्ष 2017 में इसे संकटापन्न (Endangered) श्रेणी से गंभीर रूप से संकटापन्न (Critically Endangered) श्रेणी में स्थानांतरित कर दिया गया।
- माना जाता है कि यह गिरावट मुख्य रूप से इसके मार्ग और गैर-प्रजनन श्रेणियों में प्रपाशन (trapping) के कारण हुई है।

### ओकारितो कीवी (Okarito Kiwi) : वैज्ञानिक नाम *Apteryx Rowi*

- यह आमतौर पर न्यूजीलैंड में तटीय जंगल के एक छोटे से क्षेत्र के निचले जंगलों में स्थानीय रूप से पाया जाता है।
- अतीत में बड़े पैमाने पर स्तनधारियों द्वारा आवास नुकसान और परभक्षण के कारण इस प्रजाति की संख्या में गिरावट देखी गई है।
- 2017 में गहन संरक्षण प्रयासों के परिणामस्वरूप यह प्रजाति लुप्तप्राय (EN) से अतिसंवेदनशील (VU) की श्रेणी में आ गई है।
- इनमें 'ऑपरेशन नेस्ट एग' (Operation Nest Egg) शामिल था जिसके तहत अंडों या छोटे चूजों (Chicks) को जंगलों से हटा दिया गया था और कैद में रखकर उनका पालन किया गया तथा मोटोरा द्वीप पर आक्रमणकारी स्टोट (Stoat, एक प्रकार का जीव) की उपस्थिति से निपटने के लिये पर्याप्त उपाय किये गए।

### वेस्टलैंड पेट्रेल (Westland Petrel) : वैज्ञानिक नाम *Procellaria Westlandica*

- पुनाकाकि (punakaiki), दक्षिण द्वीप, न्यूजीलैंड के पास घने जंगलों की तटीय तलहटी में घोंसला बनाकर रहने वाली यह प्रजाति गर्मियों के महीनों में केंद्रीय प्रशांत, पूर्वी न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी किनारे तथा दक्षिण अमेरिका में प्रवास के कारण व्यापक रूप से दिखाई देती है।
- हालाँकि, क्षरण, भूस्खलन और संभावित तूफानों के कारण इस पक्षी के प्रजनन स्थलों के नष्ट होने के चलते इस प्रजाति को गंभीर रूप से खतरा उत्पन्न हुआ है और जिसके परिणामस्वरूप 2017 में इस प्रजाति को अतिसंवेदनशील (VU) से लुप्तप्राय (EN) की श्रेणी में रखा गया है।
- इस प्रजाति के लिये प्रजनन क्षेत्र पापारोआ राष्ट्रीय उद्यान है और इसे एक विशेष क्षेत्र नामित किया गया है जो जनता द्वारा उपयोग कियी जाने को प्रतिबंधित करता है।
- संभावित शिकारियों की पहचान करने के लिये निगरानी चल रही है जो कि इस प्रजनन स्थल पर इस प्रजाति के लिये खतरा हो सकता है।

### चेस्टनट-कैप्ड लाफिंगथ्रश (Chestnut-Capped Laughing Thrush) : वैज्ञानिक नाम *Garrulax Mitratus*

- इस प्रजाति को 2016 की सूची में कम चिंतनीय (LC) श्रेणी में रखा गया था जिसे 2017 में संकट के करीब (Near Threatened-NT) की श्रेणी में रखा गया है।
- यह पक्षी दक्षिणी थाईलैंड में प्रायद्वीपीय मलेशिया और सुमात्रा (इंडोनेशिया) में पाई जाती है।
- ऐसा संदेह है कि पिंजरे के व्यापार के लिये इस प्रजाति की मांग से सुमात्रा में इसकी संख्या में गिरावट हुई है।
- हालाँकि थाईलैंड और मलेशिया में इसकी संख्या में कमी का कारण पिंजरे का व्यापार नहीं है किंतु समग्र रूप से देखा जाए तो इसकी वैश्विक आबादी में तेजी से गिरावट आई है।
- यह सबसे आम इंडोनेशियन लाफिंगथ्रश है जो प्रमुख पक्षी बाजार, जकार्ता में विक्रय की जाती है और वर्तमान डेटा इंगित करता है कि इस प्रजाति की हार्वेस्टिंग दीर्घकालिक है अगर ऐसा होने से रोका नहीं गया तो इस प्रजाति को बचा पाना मुश्किल हो सकता है।



**ब्लैक-लेगड किटीवेक (Black-Legged Kittiwake) : वैज्ञानिक नाम *Rissa Tridactyla***

- पिछली तीन पीढ़ियों (39 साल) से इस प्रजाति की संख्या में कम-से-कम 30% की गिरावट के परिणामस्वरूप इसे IUCN 2017 की सूची में कम चिंतनीय (LC) से **अतिसंवेदनशील (VU)** श्रेणी में रखा गया है।
- माना जाता है कि यह गिरावट ओवरफिशिंग, समुद्री तेल फैलने, पुराने तेल के फैलने और मत्स्यपालन तथा शिकार के रूप में पकड़ने के माध्यम से खाद्य संसाधनों की कमी से प्रेरित है।
- यह प्रजाति एवियन इन्फ्लूएंजा के लिये अतिसंवेदनशील भी हैं और अपतटीय पवन फार्म के साथ टकराव के कारण अत्यधिक खतरे में है।
- इन प्रजातियों के लिये संभावित संरक्षण कार्यों में तटीय क्षेत्रों में शिकार मुक्त नेटवर्क का निर्माण और अत्यधिक मछली पकड़ने से रोकने के लिये टिकाऊ प्रबंधन शामिल है।

**प्लेन्स-वांडरर (Plains-Wanderer) : वैज्ञानिक नाम *Pedionomus Torquatus***

- पिछली तीन पीढ़ियों में न्यू साउथ वेल्स और विक्टोरिया के आखिरी दो गढ़ों में, 90% से अधिक की रिकॉर्ड की गई गिरावट के कारण यह प्रजाति IUCN की 2017 की सूची में लुप्तप्राय (EN) से **गंभीर रूप से लुप्तप्राय (Critically Endangered-CR)** की श्रेणी में आ गई है।
- यह गिरावट देशी घास के मैदानों की खेती के कारण हुई है।
- अपर्याप्त चराई, अनुचित आग, कीटनाशकों के कारण मृत्यु दर और दीर्घकालिक जलवायु परिवर्तन के फलस्वरूप होने वाले सूखे के कारण घास के मैदान का नुकसान इस पक्षी की संख्या में तीव्र गति से गिरावट का कारण है।
- वर्तमान संरक्षण प्रयास इसके आवास आवश्यकताओं को समझने और जहाँ यह प्रजाति पाई जाती है वहाँ संरक्षित क्षेत्रों में इसके आवास को शामिल करने पर ध्यान दिया जा रहा है।